करनी का फल

कम्पिलपुर के राजा ब्रह्म और रानी चुलनी के एक तेजस्वी पुत्र था ब्रह्मदत्त। राजा ब्रह्म के चार घनिष्ट मित्र थे–काशी का राजा कटक, हस्तिनापुर का कणेरुदत्त, कौशल नरेश–दीर्घराज और चम्पापति-पुष्पचूल।

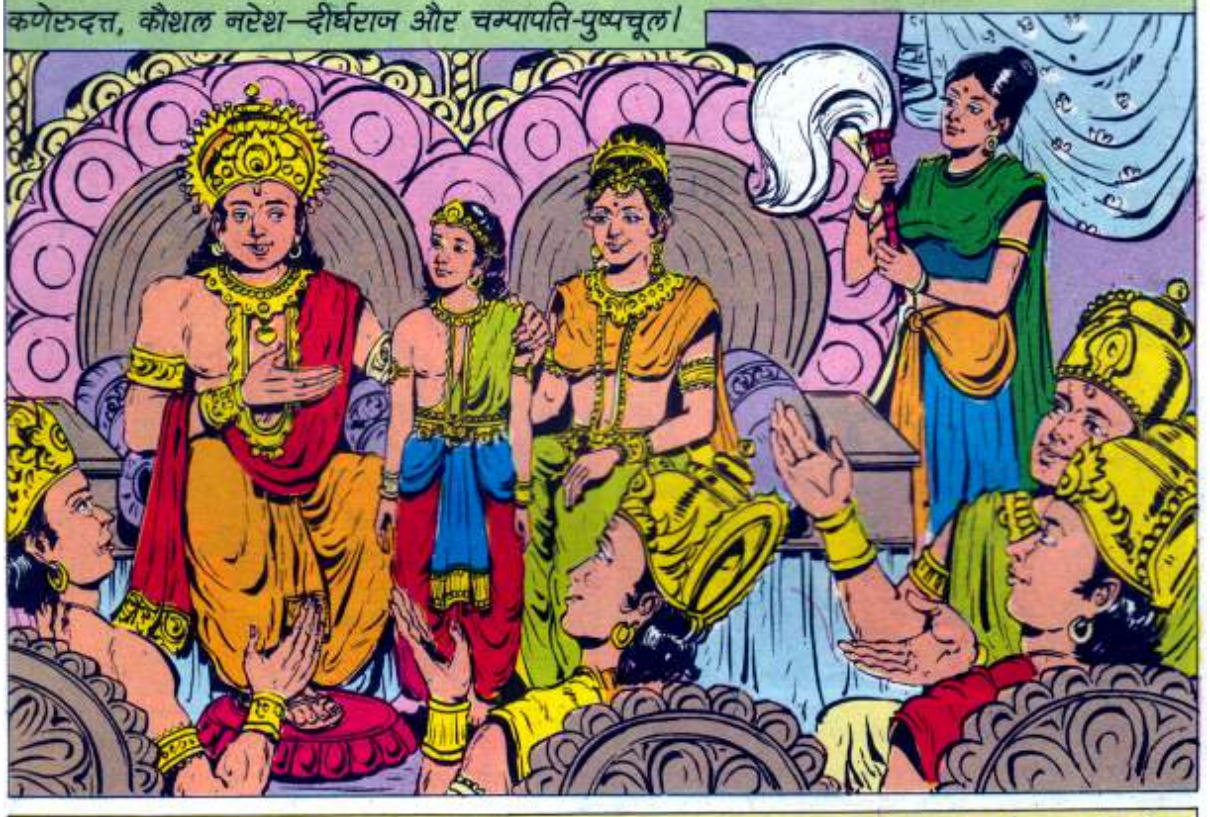

एक बार ब्रह्म राजा बीमार पड़े। वैद्यों ने बहुत उपचार किये परन्तु बच नहीं सके। चारों मित्र राजाओं ने मिलकर ब्रह्मराजा का अन्त्येष्टि संस्कार किया। शोक निवृत्ति के बाद वे आपस में विचार करने लगे।

राजा कणेरुदत्त ने सुझाव दिया–

राज्य के मंत्री-सेनापति आदि सभी ने इस निर्णय का स्वागत किया।

दीर्घराज ने राज्य व्यवस्था सँभाल ली। धीरे-धीरे दीर्घराज चुलनी रानी के रूप पर मुग्ध हो गया। एक दिन उसने रानी से कहा–

रानी चुलनी भी स्वभाव से चंचल और शरीर वासना की भूखी थी। उसने दीर्घराज को उत्तर दिया–

दीर्घराज ने चुलनी रानी को अपनी वासना के जाल में फँसा लिया।

धीरे-धीरे रानी चुलनी और दीर्घराज खुलकर प्रेम लीला रचाने लगे। वफादार प्रधानमंत्री धनु ने रानी को समझाया परन्तु रानी ने उल्टा उसे ही डाँटा दिया–

मुझे सीख देने वाले आप कौन होते हैं? मैं इस राज्य की स्वामिनी हूँ.... जैसा चाहूँगी करूँगी....

मंत्री ने सोचा–

अब तो पानी सिर से ऊपर निकल रहा है। कहीं यह बहाव कुमार ब्रह्मदत्त को ही न डुबो दे....

मंत्री धनु ने अपने पुत्र वरधनु को बुलाकर कहा–

वरधनु ! महारानी वासना के जाल में अंधी हो चुकी है। ऐसी नारी का कोई भरोसा नहीं.... तुम कुमार ब्रह्मदत्त की रक्षा का ध्यान रखो।

एक दिन वरधनु ने कुमार ब्रह्मदत्त को सावधान करते हुए कहा–

कुमार, आपको पता नहीं, इस राज्य के संरक्षक बनकर दीर्घराज ने हमारे साथ बहुत बड़ा विश्वासघात किया है। उसने राजमाता चुलनी को अपने वासना जाल में फाँस लिया है।